भास्कर प्रकाश

भाग 2

संपादक

स्वामी श्री आफताब जी

कारिहामा निवासी (कश्मीर)

धर्मार्थ्य वितरण

भजन नम्बर 27

ओंकार आधार हे उमा पुत्र।
हे लम्भोदर घर चोनय ध्यान।।
प्रेम सोर : सोरहत हे विद्यादर।
गज मुख सन्मुख दर्शन म्य हाव।
हर मुख सुख वनि इत मन सर ।। हे ल॰
मूलीधार लोल आम योगेन्दर।
चतुर दल वुलसित विराजमान।
प्राण अपाण अर्ग़ बर्ग़ पूज चान कर।। हे ल॰
नयाक विनायक छुक सहायक गुरु।
चतुर भुज़ चोर आयुध चमकान।
धर्म अर्थ काम कामकि मृक्ष दातर।। हे ल०।।
उमा नन्दन क्षमा सागर।
रुम रुम रुमन छयम चानी कल।
रुमा रूज़ित बोजतम आर्चर।। हे ल०।।
यज्ञन भक्ष विघ़हार गगन पीताम्बर।
मगन आनन्द सन्दि वन्द होय पान।
चि़त विमर्श दीप्ति मान कोटि सूर्य चन्दर।। हे ल०।।
भक्ति रक्ष शक्ति प्रिय हे वल्लभादर।
मोक्ष दात रक्त वर्ण छुक च़ त्रिनयन।
पोख़तकार मुखत़ार मुरक्कत बनि मुखतसर।। हे ल०।।
एक दन्त वक्र तुन्ड हे सिद्धि दातर।
दीर्ध मोर मुकट शोभायमान।
मूषक वाहन योनि नागेन्दर।। हे ल०।।

लाल माल नाल छय हे बाल चन्द्र।
माल करहै इत साल छुय सोन।
शिब नाथ सन्दि टाठि हे इछापुत्र।। हे ल०।।
आदि देव व्याधि कास भास न्यबर अन्दर।
सत सती माजि हन्दि पास कर म्य पीस।
मननिवास आस भास नोन भास्कर।। हे ल०

भजन नम्बर 28

योगेन्द्र गौरी शङ्कर गिरिधर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
चान्यन चरनन् हुन्दुय छु आसर।
व्याध कास अन्तः करणन भास।
शरणगत वत्सल परमेश्वर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
स्थूल सूक्ष्म कारण सान्य निबर अन्दर।
चरा चर भाव किन छुक च पूर्ण।
चर चन त अर्चन चय छुक परात्पर हर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
अविद्या गालवुन छुक च विद्याधर।
सिद्धि दातर गुरु चय सर्व शक्तिमान।
प्राण अपान अर्ग भर्ग पूज चानि कर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
चन्द्र चूड नागेन्द्रहार गिरिजाधर।
त्रिनेत्र धारवनि वृषभवाहन।

जटा मुकट ह्यात शशि शेखर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
उंद स्त भस्माधर शीत सुन्दर।
शंख शूल पदम हस्त वारु अभय।
गज़ चम् हे रभ्भ वस्त्र दिगम्भर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
कारण त देवगण तोतनस त्रिअङ्गर।
धारवनि सिद्ध नित्य चोनय ध्यान।
तार वुन करनावि तार भवसागर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।
घटि मन्ज़ प्रज़लान छुक च सांस भास्कर।
आश तोश छट छाय कास भास नोन।
धर्म अर्थ काम दायक मोज्ञ दातर।
श्री सत् गुरु हर बुविनय जय।।

भजन नम्बर 29

चन्द्र चूड शीखर सुन्दर गंगाधर।
शंकर सु र्सव शक्तिमान वरि म्य।।
आश तोश नाश रस्ति शान्त वेद सागर।
भ्रान्त भ्रम कासवुन त्रिज़गत नाथ।
कैलास वास एकांत गिरिजाधर।
शंकर सु सर्व शक्तिमान वरि म्य।।
सूर नूर भरिथय सुय परात्पर हर।
शक्तिपात भक्तियन करान अनुग्रह।

त्रिनयन मनन शील ननि नोन दिगम्भर।। श०।।
शिव गाशि प्रव रव त्राव अन्दर निबर।
नवि नव नव द्वार तर बहिम् द्वार।
दशम् द्वार तार दियि द्वादशान्त अन्तर।। श०।।
ओं भू भुंवः योगेश्वर सु गुरु वर।
आप्त काम व्यापक सु शिव निर्वाण।
अष्ट सिद्धि दातर इष्ट देव दुष्ट हर।। श०।।
प्राण अपान अर्ग भर्ग पूज तस कर।
गोड़ मान्सर दीप दजि अहंकार।
ज्योति विभूति हर मुख ब्रह्य सर।। श०।।
सत ऋषि त कारण सिद्ध बियि गन्धरव।
शशि त रव निशिदिन ध'रवन्य छि ध्यान।
ऋद्धि त सिद्धि दिवान सु सिद्धि दातर।। श०।।
तमि सय यि संसार चकर।
तमि सन्दि शासन जगत वर्त्तान।
कैलास वास भासमान सास भास्कर।। श०।।

भजन नम्बर 30

अर्ध नारीश्वर गौरी शंकर
वरदायक गिरि धारी।
सुर नायक विनायक इछा पुत्र–
दर्शन सर्व प्रकारी।
मातानुग्रह शक्ति पात त्रसीद।।
दीश काल व्यापक हीशरस्ति ईश्वर

हे पशु पति विश्वधारी।
शेष शायन अर्चित शशि शीखर
निशि भास वृषभ सवारी।। मातानुग्रह।।
त्रिधाम त्रिनयन त्रिपुरान्तक हर–
त्रिगुण पुर त्रिपुरारी।
त्रनवय कारण तोतनस चे त्रअक्षर
तुर्यातीत सर्व न्यारी ।। माता ०।।
दय ....अद्वय दय गछतम च प्रियवर–
कर दय दय भय हारी।
दयायि चानि जय बॉन निरन्तर–
हे दय सर्व उपकारी।। मा ० ।।
सन्मुख भासतं हे गंगाधर
हर मुख नोन चय सुर ब्रह्मसर।।
सुख मुख़ वर दुख हारी।
गुर मुख़ ज़ान हंसद्वारी ।। मा ० ।।
पूर्ण परूषोत्तम परमेश्रर–..
प्रियवर प्रीतम प्यारी।
प्रत्येक परमात्मा प्रात्पर हर–
परमानन्द हितकारी ।। मा ० ।।
इष्ट देव काशी काश्मर।
दुष्ट नष्ट कर कष्टवारी।
सन्तुष्ट बन स्पष्ट चय इष्ठ दातर–
सर्व जेष्ट श्रेष्ठ आधिकारी ।। मा ० ।।
आदन सूर बोन्य नाद बिन्द अज्ञर–
साधन चय रक्षाकारी।

पादन चे़य लगहोय आदि कोठि भास्कर–
तत सत् चित् सुफारी।। मा ० ।।

भजन नम्बर 31

दय म्यानि अक्षय हे मृतञ्ज़य
भय कास भास नोन चोपारी
शरणय च़रजन आसय ब दय
भय कास भास नीन चोपारी
नेत्रय बथरय प्रेम निर्णय नय
मित्रन हन्ज थाव सरदारी
पाशपत अस्त्र शुत्रुन करत ज्ञय
भय कास भास नोन चोपारी
धर्म सहकारी सारी चोपारी
अमृत चावुक त मारी कुस
मरमर चलि युथ सपंपनन निर्भय ।। भय ० ।।
नारस ति गुलजार बनि युथ क्षण क्षण।
दिन दिन बसन्त बहारी।
ननि नोन अनुग्रह कर युथ बनि जय ।। भय ० ।।
कालुक काल छुक दुष्ट छिय गलन।
पालुन श्रेष्टन हुन्द समबन्ध।
दिक् पाल राछ हचथ छुक वर्दाभय ।। भय ०।।
सुख मुख दुख कास भास नोन हरमुख ।
गुरू मुख चइ छुक सहारी।
सन्मुख चय भास्कर सास आनन्दइ ।। भय ०।।

भजन नम्बर 32

वन्दे मैं तेरे चरणों,
नन्देश ईश सरदार।
आनन्द दाता शरणों
बन्धनों से करत छुटकार।।
वन्दे मैं तेरे चरणों।।
तू माल्किे ज़मान् हो,
तू खालिके जहान् हो।
व्यापक तू लामकान् ·हो।
जान हो र्सव जानदार।। वन्दे ०।।
शक्तेश शक्ति सम्पण,
मकत्ेश भक्ति रञजन,
मकंत्ेश मुक्त कारण,
दाता त पोखत मुखतार।। वन्दे०।।
नाना रूप धारी,
भकतों का हितकारी।
शासन अधिकारी।
कश्मीर राज दरबार।। वन्दे०।
यज्ञेश विधन हरता।
सृष्टि स्थित लय करता।
भकतों का तू भर्ता।
धरता अनेक अवतार।। वन्दे०।।
विनती सुनो महाराज।
गखो सदा मेरी लाज।

स्थित करो धर्म राज।
सर्ताज बस यह उपकार।। वन्दे०।।
सुख रूप मुख दिखाओ।
हर मुख दुख मिटाओ।
गुरू मुख विधि सिखाओ।
सन्मुख बनो सहाकार।। वन्दे०।।
कोटि भास्कर चमत्कार।
सर्वज्ञ सर्वाधार।
सत रूप सत आकार।
निर्गुण व्ययि निराकार।। वन्दे।।

भजन नम्बर 33

हे नाथ अनाथनय दया कर।
हे नाथ रमा पति झमा कर।।
दुस्तर महान भव सागर।
दिम तार बनाव तन गोखोर।
रूम रूम रमान च़ बाह्य अन्तर।
रूमा च रोज़ बोज त आच़र। हे नाथ०।।
हे नाथ माफ पाप म्यान कर।
सन्ताष त्रिविध शाप दुख हर।
हे नाथ शफाफ साफ मन कर।
हे नाथ मिलाप सुरूप प्राप्त कर।। हे नाथ०।।
लोभ काम क्रोध मोह अंहकार।
मन म्यानि निशि दूर कर इकबार।

राक्षस दुरात्मा दुराचार।
विचार खड़ग करूक संहार।
साम्राज्य ज्ञान योग सिद्ध कर।। हे नाथ०।।
यस चान्य दया सपनि भरपूर।
दुख शोक चलान फुलान तिमन् नूर।
ऋण रोग वियोग छुक गछान दूर।
संयोग बिभूति योग छुक भर पूर।
भक्तयन मुक्त गछुन छु मुखतसर।। हे नाथ०।।
निर्गुण सुगुण सकल निराकार।
माया मयी रुप भाव प्रखचार।
युग पथ च धारवुन दश अवतार।
सुब धर्मकुय शान नोन नमोदार।
दुष्टन दुरात्मनन छु मर मर।। हे नाथ०।।
हे नाथ यि दर्द सोज़ फ़रयाद।
कन दारित बोज सतुक यि सम्वाद।
मन्जूरि नज़र कर वुन्य च प्रसाद।
रोज़ बोज़ च सोन अँचैर नाद।
आदन बाजि करत वादः पूर।। हे नाथ०।।
सुव शाम रमान सुवह शामय।
सुव राम प्रमाण आप्त कामय।
सुय राम समान परम धामय।
सुय धाम दमान प्राणायामय।

निर्मान सु राम सास भास्कर।। हे नाथ०।।
ज्य़व दिम म्य तिछ युथ ब गीत ग्यव।
अनुग्रह प्राव त्राव प्रव।
नवि प्रणाव भास सास रव।
शिव गाश अनुभव शिव शिव।
तव नवि बोव दय्व गछ ब अमर।। हे नाथ०।।

भजन नम्बर 34

भक्त भावनायि मोक्त ब्योल जावो।
शकि पात द्राव अनुग्रह फल।
पोखत कारण छु तमिकुय चाबो।
मुक्त मुखतसर मानस बल।
हंस पखवय पान वुफ़नावो। श०।
नन्द गोर्युन परोहित आवो।
मुख़त माल ह्यत कारूक मंगल।
वाक़ खादन्रूक ताक साथ द्रावो। श०।
हार अनमूल वुछित व्यसरावो।
मन जसांदायि–गयि चच्चल।
यथ छु पुशरून प्रास थदिनावो। श०।
बाल गोपाल तमि बाल भावो।
बालक ह्मत करान छल बल।

गिन्दनस सु गिन्द वबोलसन्न आवो। श०।
गय लज़ि पजि ती प्रकटावो।
यो बूज़मुत तिमौ हल चल।
अज़ मा सन मन्दछयम नावो।। श०।।
अन्द्री तस छन्दरून आवो।
इन्द्रस स्यूत करि क्या छल।
सु छु चुरि चुरि करान हाव भावी।। श०।।
छाल मारान जागित आवो।
त्यागित लज करनि ग्रांगल।
माल नीनस गल में पावो।।। श०।।
डाल दिवान शुय ह्मत द्राबो।
बन्सरी ह्मत नैन पदम दल।
राधा कृष्ण वाद प्रकटचावो।। श०।।
दम गौ तस वनि कस ग्रावो।
रूम रूम गय गुमन तल।
हयम कस त दिम बुथ कस हावो। श०।।
लारान पत लजमिच दावो।
प्रारान छित गय निर्बल।
हारान मोख प्यठ सूर्य तावो।। श०।।
असवुन रस भरवुन चावबो।
ज़ोनुन लज़ि गय मुहमिल।
माल कडन नाल त छकनि द्रावो।। श०।।

फलि फलि माल अकि हवावो।
छ्कारित छुन्यिन मन्ज़ जंगल।
निगंलन छु नार तस लरज चाबो।। श०।।
प्रास क्या दिम ख़ास छ्युन्याबो।
सुन्य गरि ननि अज़ प्यठ तल।
गन्ज़रन मां छि नालय द्रावो।। श०।।
दय लाज रछ शर्म सीर थावो।
आसर लर त्रावित बर तल।
सास भास्कर खास प्रकटावो।। श०।।

भजन नम्बर 35

नालमति रटहत डगंय त्र्यट त माल।
बाल गोपाल सान्य पालना कर।।
दाय बोज़ मायि किन गयस यच मुतवाल।
लाययन मालि पुछि छायि मस रोज़।
नबच्यन तारन गंडय त्र्यट त माल।। बा०।।
वन वन मन मन्जि लज़मच शर्मि जाल।
मोखत माल अन कति पुषरन भोग।
मुख़तसर वननम असलय छि छिनाल। बा०।।
थचि मच ताप मन्जि गच गयि कमि हाल।
मन्दछेमच सच पानस करान।

पननी योद वातिहेक ह्मत चोलुम दिवान डाल।। बा०

छाल ओस मारान बाल बाल गोपाल।

गवाल बाल स्वूत यच हर्षमय।

माल कडन नाल त छकरन बाल बाल।। बा०।।

जसोर्दाय हाल गौ यच़गयि बेहाल।

अहवाल भावि कस कमि हालय।

गामच निहाल गयि यच दोपुन गौ महाल।। बा०।।

बडि नाद लोयनस हता म्यानि नन्द लाल।

लोल आम बोलान कृष्ण कृष्ण छचस।

च़ालि च़ालि नेत्रन छम माखतनि चाल।। बा०।।

अन्तर्यामी जानान अहवाल।

नाल रटन जसोदा ममतायि सान।

मायि सान आसवुन छुस बनान मिसाल।। बा०।।

माजाय मोखत ब्योल कोरमय वनस हवाल।

मुखत् थरि रंग रंग त कुलि फुलिमित।

माख़त सीत भरन आयि जंगल कोह त बाल। बा०।।

हीरि ज़न सो गामच बीरि नेरि फल निहाल।

सीर बोज केंछा पछ छचस इवान।

वीर र्तात यीर नत जोनुन शुर्य खयाल।। ब०।।

दोपनक नीरिव शुर्य त्रयि बड त बाल।

पोख़त कार मोख़तस करिव अम्बार।

फलि फलि ख़ल समि त्राव वोनि मलाल।। ब०।।

सारी समिथ आयि ब्रजि लोक बडि त बाल।
मोखत कुलि मूरि मूरि भरि भरि वुछान।
दुर शहबार शब चराग रत्नलाल।। ब०।।
अल्मास ज़मरूद मोखत नीलम मिसाल।
भरि भरि कुलि त कान दान दान सेर।
सासबद बागवान लछिबद द्वारपाल।। ब०।।
काश्तकार लछिबद खुद काश्त नन्दलाल।
योग माया वुछित गय हैरान।
सोम्बरान भक्तिकिन लूक मोखत सुकाल।। ब०।।
मीनित बैगरान कस वाति कीत कनाल।
बैगरान नन्द गूर जागीर दार।
सारिवय धर भर मोख़तकी गतिकाल।। ब०।।
बैगरान भाग्य यस यि ल्यूखमुत कपाल।
कारिगर मोछिफोल सोंबरावान।
डोशित परोहित क्रेशान तमि हाल।। ब०।।
ज़ानुन वेल बोत मेलनुक तमि काल।
अनुग्रह पपनस नोन शक्तिपात।
गणेशि त्रख़ सोम्बरनि द्राव आय रुत फाल।। ब०।।
खारबादि मोखत अनमोल बियि रतनलाल।
गणेशि त्रख प्रथ कांसि भोरनस लोल।
हतबादि गुरि भार ह्यत खुस हाल।
लूकौव घर भर मोखत पोखत ख्याल।

नन्द गूरि देवार मोखतुक लोद।
भकि भाव ज़ोनुक सारिवय सु दयाल।। ब०।।
सासबादि गुरि भारि मोख़त बियि रत्नमाल।
प्रास पुशरनि भोग़ बृक्षभानुन।
सूज़ुक यश द्राव आकाशि पाताल।। ब०।।
परोहित थ्यकि कूत ज़्यवि स्यूत कताल।
बैकुन्ठनाथ पान् ब्रिजमोहन।
नव निधान हथ कवीर लक्षमी दिवान डाल।। ब०।।
सुय शाम पीताम्बर नाल वनमाल।
शेरि मोर मुक़ट बन्सरीधर।
मुखतसर भक्तियन छि मुखती तत काल।। ब०।।
तमि वेल मेलान भक्तियन सु काल।
खेलान अथवास कारथ रास।
भास्कर सास भरि भरि प्रेम प्याल।। ब०।।

भजन नम्बर 36

रधाकृष्ण बोल लोल छु आमुतये।
नोन द्रामुतये बिन्द्राबन।।
माहिनी रुपा दारित आमुतये।
मोह मोतये छुस सोर त्रिभुवन।,
मोह घटि श्याम रुप सुबह फोलमुतये।। नो०।।

रम्भल्यब केशव तम्बलोवमुतये।
त्रिभुबन पति श्री काम मर्दन।
सम्बलित पत ब्रोंट मसतानमुतये।। नो०।।
रुणि गोड श्रुणि दार सोर साम हतिये।
वेद शब्द शून्य पूर मुतये जन।
साडि वुड़नि पीताम्बर दोरमुतये।। नो०।।
नाल माल कननय सोन भोरमुतये।
जोरमुतये मोखत चूनि लाल मन।
कछकर मछवंद सन्धोरमुतये।। नो०।।
भुमनय मन्ज़ सुम ख़ाल कोरमुतये।
भरिमितये नैन मस खास ज़न।
शेरि मोर मुकट मोखत जोरमुतये।। नो०।।
मन्द हास इन्द जन नभ वोथमुतये।
तम्बलोवमुतये शिव शम्भो।
तमि रुप गोकल सखर्योमुतये।। नो०।।
वाज़ि बुगरि आन बाजि राजर्यनि कितिये।
ज़गि होन्द राजि मोहन सु माहान।
कनने द्राव त्रियि वेष दोरमुतये।। नो०।।
त्रियि वेष दारिथ द्राव लोत लोतये।
आविजि ज़ाविजि ग्रायि मारान।
राधायि वुछिने घरि द्रामुतये।। नो०।।
आंगन मंज चाव सांग कोरमुतये।

नागिन केशन अलराबान।
भ्रम गोख चन्द्रम नभ छु वोथमतये।। नो०।।
मोहनी रुप आलव कोरमुतये।
वाजि बुगंरि आनि वाजि साज़ सुर्म सान।
राज़ द्वारस योर कननि आमुतये।। नो०।।
देवन त ज़ीवन सुय मारमुतये।
ऋषि क्रेषान डेशिहोन ननि नोन।
सास भास्कर ज़न पूरि ख़ोतमुतये।। नो०।।

भजन नम्बर 37

खोनि मन्ज़ ललवत ईश वेष धारो।
श्याम रुप निर्विकारो वे।।
माया मस के सौदागारो।
मोहान छु खरीदारी वे।
आख मालि कनने कमि शहारो।। श्या०।।
थोकमुत छि पकि पकि कोर पत लोरा।
पन्थन दूर कति प्रारो वे।
दोह दरि लोगमुत प्याठ छुम भारो।। श्या०।।
गोकल वृक्ष भानुन खज़द्वारो।
ड़ीशित गयि आश्रचारो वे
सम्पदायि मायि तस वोनुन एकवारो।। श्या०।।

गहन पात साज सगम लाग जरकारो।
कोरि म्यानि राधयि वारो वे।
महलखान मन्ज़ छुन कांह अहलिकारो।। श्या०।।
यूत मोल मंगहम दिमय धन द्यारो।
तूलि तूलि लोल सान वारो वे।
लोल तस छु तोलुन कुस खरीदारो।। श्या०।।
मोहिनी राधायि स्यत सरकारो।
ड़ीश ड़ीश वसान अशिधारो वे।
हिशि रस्त दोनवै कुनय आधिकारो।। श्या०।।
रंग रंग अगं अंग सोलह सिंगारो।
बे रंग सर्व आकारो वे।
वुछ वुछ प्रिछ प्रिछ करान छुस प्यारो।। श्या०।।
कोंग कोफूरै मुष्क अम्बारो।
बदनस तस छु प्रक्चारो वे।
सास रव प्रव ज़न मन्ज़ अंधकारो।। श्या०।।
शीरन त पीरन छुस प्रछ़ान बारो।
मार मच छोम अमारो वे।
चोन्ज़ दायि शूभनय स्वर्ग परिवारो।। श्या०।।
गोन्डमुत छुय ना विबाह कारो।
तान जान मन्ज़ राज द्वारो वे।
चायि हिशि जूनि शूभि सूर्य प्रकारो।। श्या०।।

छ़ल छुस प्रछान बल अधिकारो।
मेछि मुद्रि कथ व्यवहारो वे।
त्रिय भाव वोननास केंह लोगुस न चारो।। श्या०।।
दोपनस नन्द गोपी कृष्ण आवतारो।
तस स्यूत छूम मिलचारो वे।
मालि माजि कोरमुत सुय विचारो।। श्या०।।
मोहिनी दोपनस क़्याह यि अंधक़ारो।
शोभि करित युथ विखच़ारो वे।
तव ख़ोत कोनय़ द्युतनय ज़हारो।। श्या०।।
दोध थनिचूरसय नट सांग धारो।
कोर्यन सयूत व्यभिच़ारो वे।
गूर श्युर ह्यत छूय नित्य पहरदारो।। श्या०।।
वनिरावुल ख़यवान दोध थनिधारो।
शोभि शरमि रुसत कारबारो वे।
बर बर फेरान त्रवित घरवारो।। श्या०।।
कोलि कोनय छनिनक गंड़िथ पत्थारो।
रांड कूत भांड मकारो वे।
नाजनीन छयक डायि पोषि तूलहारो।। श्या०।।
राधायि वोननस ओननस आरो।
जर छुयन च्य़ गाठजारो वे।
बर छयस गामच तिम सनिद अमागे।। श्या०।।

कारण त इन्द्राज बन्द बरदारो।
इन्द रव नव गृह सितारे वे।
हुकमस छि ताबेह छुक सु सरकारो।। श्या०।।
जगि मन्ज़ धारान दश अवतारो।
दृष्टन करान संहारो वे।
ज़न्म ज़न्म तमि सुन्द म्योन मिलचारो।। श्या०।।
पास छुयन हास त्राव नास त्रास फचारो।
आस कमि द्रोय युथ ढकारो वे।
सास भास्कर छोय तमि सुन्द चमतकारो।। श्या०।।
मोहिनी लोलुक तूल अम्बारो।
होवनस कृशण रूप वारो वे।
धारि ओश दोन वन्न वसान आबशारो।। श्या०।।
अन्द्र निबग कृशणय कुनय आधिकारो।
कुनिरूक नन्यर क्या सहारो वें।
कृशणय राधायि करवुन प्यारो।। श्०।।
महारिन बनिथय यिमय शोभिदारो।
कारण तै देव परिवारो वे।
लगन करिथय निमथ स्यत वारो।। श्०।।
प्रेमुक वाद दिथ द्राव वार कारो।
सम्पदायि झ्रोतुन मुोल वारो वे।
मायातीत सुय जगत आधारो।। श्०।।

भजन नम्बर 38

पेश शयन ईश नोन द्रावो।
आव राधायि वरने।
बाल गोपाल ह्मत बृज बाल।
नाल शोभानवनवनमाल।
वाल कननय मोखत चूनिलाल।
मुकट डयकि टयकि खाल।
पीताम्बर सु श्याम प्रकटावो। आ०।
स्वर्ग अछ रच़ नाच करनस।
गन्धव्र स्वर साम परनस।
इन्दु रव गत करनस।
स्वर्ग मंडलकि ध्यान सुरनस।
दुर्गायि वर्ग वन वानो। आ०।
गरूड वाहन शङ्क चक्र दार।
शेरि मुकट शोभिदार।
गो लोक ज़ान वृज परिवार।
इन्द्राज छत्र बरदार।
योग माययि हुन्द हाव भावो। आ०।
शोभि सान वोत मन्ज़ राज़द्वार।
वैकुन्ट बन्यूमुत धरबार।
गुल त बुल बुल हयत आबशार।

बूलि बोलान रूस जान्वार।
राधाकृशण कृशण भखतिभावो। आ०।
स्र्वगी फर्श अर्श ताबान।
रंग रंग साज़ सामान।
प्रंग़ त पलंग अंग रंगान।
साल ख्यनि ब्यूठ शोभिसान।
इछा भोजन क़ोरूक भोग भावो। आ०।
लग्नुक लगन सु पान माहाराज।
ज़गि मोकूफ गौ छत त बाज।
ब्रह्मणान म्यूल बियि साम्राज।
भक्तयत हन्ज़ रछवुन लाज।
राजरिनि माजि होव प्रभावो। आ०।
मधु रयव डेग खत अग्रस।
त्रप्त गौ रेह वच्च गगनस।
प्रज़ापत पान ब्यूठ लगनस।
माया तीत मन मग्नस।
जगि मन्ज़ त्युथ उत्सवबन्यावो। आ०।
स्वर्ग़ अछ रच योगिने गन।
बिष्णु मायियि वन वन।
कर्म लीखा योग लेखन।
कलुश गृह बीठ हर्षि खानन।
वर्ष फ़ल रूत प्रकटावो। आ०।

स्वन गहनः मोखत चूनि रत्न लाल।
स्वर्ग वस्त्र जोरि शाल।
गंरि हस्त गाव धन ध्यार माल।
धाज राजिरिनि द्राव़ रूत फाल।
वाद पूर्यर करान क्रावो।। आ०।।
सम्पदा हयत बियि बृक्षबान।
भाय बन्ध हयत हर्षाण।
च़ालि च़ालि भक्त मोखत वर्षान।
कृष्णस बियि राधायि सान।
पान आलवान त द्राख लाव तावो। आ०।।
महाराज हयत सु महार्यज़ द्रावो।
यच़ नन्द गूर भरवोन चांवो।
योग माययि भोग प्रकट् यावो।
ऋण रोग शोक गयि अभावो।
छुकन तोषान दय टोठयावो।। आ०।।
दय पथ रछ गत ननि हावो।
भय शोक दुख दूर करनावो।
ऋण रोग मोह सारी हरनावो।
प्रण योग क्षेम याद पावो।
लाज सानि रछ मसा मन्दछावो।। आ०।।
वेल मेलनुक छुयना याद।
मेलि दय तेलि रूम रूम नाद।

गेलुन चलि त गलि उपाद।
फैलि अन्द्र निबर कृष्ण वाद।
भास्कर सास प्रजलावो।। आ०।।

भजन नम्बर 39

रटहत ब नालय च साल इखना।
ब प्याल प्रेमकि भरय हा लालो।।
वजान रत्रेहच तार वुजान यि लोल नार।
दजित म्य प्रेम शाह परै हा लालो।। ब०।।
जर ज़र गाजथस सरि श्याम लाजथस।
काच जून जन बो दरे हा लालो।। ब०।।
फिरान दफतर सोरान दादी।
परान वरक अन परै हा लालो।। ब०।।
ग्वाल वछि गाव छिय नाल दिवान।
सु लाल मा गव गरै हा लालो।। व०।।
ऋषि आय क्रेषान ज़ाह छिन्न डेशान।
बो माल पोषन करै हा लालो।। ब०।।
लागय ब सन्यास गोपाल इखना।
ब लोलि मन्जुल करै हा लालो।। ब०।।
कलन कम्तूर चलन रटन वन।
कालि हिय तन हरै हा लालो।। ब०।।

तबै ब बर तल छुस लर त्रवित।

च़ पास कर भास्करै हा लालो। ब०।।

भजन नम्बर 40

फोल वनि सोन्तय छुय म्योन सालो।

लालो अज़ वुलो माल्युन म्योन।।

आरवल आरक्रन्ज़ गयि कमि हालो।

च़ालि च़ालि ओश दारि हारान छ्यस।

यच़ काल गव व्रोन्य प्रार कूत कालो।। ला०।।

यम्बरज़ल ल्जमच बोम्बरन्य ज़ालो।

प्याल हयत मसवलं प्राराण छ्य।

दूर्यरूक दाग दिलास हचत छुय गुलालो। ला०।।

मायि चानि सुलि बुलि फोजिहीयमालौ।

लुयि लोस इयि कर दियि दर्शुन।

द्रिय चान छयम वोन्य यूत नो ब चालो। ला०।।

रोषि रोषि करहय पोषन मालो।

रोषि मति गोयनी गोषण भ्योन।

रोषि मा पोषयनल दोह गछि वबालो।। ला०।।

आदनुक याद पाव वाद मो डालो।

नाद लोय कुकिलव गोविन्द गू।

आदन बाजि म्यानि त्राव शुर्य ख्यालो।। ला०।।

बाल वन्त ययिना नाल छस मालौ।

बाल छिस कननय ग्रायि मारान।

काल मा रावौ कसै क्या मलालो।। ला०।।

साकया प्याल चाव माला मालो।

युथ नस बाकी रोज़ि ग्राव।

बाकी रस रस बन मतवालो।। ला०।।

सास मन्ज खास सुय रटहोन नालो।

सास मलि सन्यास मेलि गोपाल।

भास्कर सास छुय नाली नालो।।

भजन नम्बर 41

गोपी नाथ भक्त रक्षिपालो।

गोपालो अज़ वुलो सोन।

गूरि गोपी वछि ब्रज़ बालो।

प्रारान छिय वाति छाल मारान।

बाल गोपाल नाल वनमालो।। गो०।।

लयि लोस प्रारान प्रार कूत कालो।

प्रियि ही तन नाविथ छस।

द्रोय चानि छम बनो वुन्य चालो।। गो०।।

रषि रास्ति ईश देश रङ्गपालो।
निशि गोपियन वेष धारान।
दारि दारि छचमे अशिने चालो।। गो०।।
नाल रटहोन् कमितान्य हालो।
बाल पानय लुलि लल नावोन।
सुलनावतने क्या गोस मलालो।। गो०।।
सोन्त आवतै द्राव रूत फ़ालो।
रंग रंग फोलि गुल त गुलजार।
बहार नोन द्राव कोन आख़ सालो।। गो०।।
गुल त गुलज़ार द्रााय पातालो।
ज़ग तचि थरि आाय फोलनस।
मायि करहोस अछि पोषि मालो।। गो०।।
वीर यिरः गय गिन्दि गिन्दि चालो।
शश पंज कयन चन्जज'य तल।
लगि शशि दर प्यट दुख़ालो।। गो०।।
दीन दयाल हीन क्रपालो।
धर्मस खुर कर्मुन कास।
न'त मधुर मस अदोर जन्जालो।। गो०।।
वेल मलनुक फोजि संगरमालो।
शाम प्रभात कर अथवास।
सास भास्कर भास प्रथ कालो।। गो०।।

भजन नम्बर 42

श्याम रूप वोलो आम लोलये।
ब करय खोनि मन्ज़ोलये।।
शेरि मोर मुकट विराजमान।
पीतांबर धर सर्व शक्तिमान।
मोक्त केश केश रम्भोलये। ब०।
गूरि गोपी वछि गाव जान्वार।
चोइशीत लछ ज़ीवन विस्तार।
राधाकृष्ण कृष्ण बोलये। ब०।
अथवास प्रथ अकिस खेलान रास।
अकरै कुनय ज़न त भासान सास।
बे रंग रंग सॅावोलये। ब०।
पोष अम्भरन भोम्बुर ज़न व्यूर छ़ारान।
इम्भरज़ल ज़न अम्बर हारा
जान्वर करान कलोलये। ब०।
रोषि रोषि गोषण पोष वथरान।
पम्पोषि नेत्रव हर्ष वर्षान।
होषि पोषनूल येरि ओलये। ब०।
सूर्य चन्द्रम ब्ययि तारागन।
प्रदक्षण करवनि छि बिन्द्राबन।
मेलि खेलि रासमंडोलये। ब०।

देवी अछ रछ तरागन।
गोपी बनथ आय बिन्द्राबन।
अर्मान छुक यच़कोलये। ब०।
ब्रह्माहस प्यठ रेय स्ययि हर्षण।
आकाशं देबता पोष र्वषण।
शड़करस यि वुछित मन ड़ोलये। ब०।
शक प्योस क्या सना छा यि महाराज।
सर्ताज द्रौपदी रछ वुन लाज।
जगि हुन्द ताज मलोलये
सरः करूनुय तस सु सरदार प्यव।
गोपिया र्बानत ब्रज भूमि गव।
ओं भूर भुव दिवान ज़ोलये।। ब०।।
छः रयत रात गयि छुस न केहति भास।
रासस़ मन्ज़ वुछुन निराभास।
कृष्ण जुव मुरली बोलयै।। ब०।।
र्स्पष किन आस यच़ हर्षण।
विमर्ष हयत नेत्रव र्वषण।
चन्दं मडल ज़न मोखत व्योलये।। ब०।।
साम स्वर काम देवुन यि सम्वाद।
आकाश पाताल सुय बिन्द्व नाद।
नच़ान हय्क्ष ध्रव मंडोलये।। ब०।।
योग बल दल दल ध्यान धारित।

तल प्यठ दशम द्वार विस्तारित।
सहस्र दल ज्ञान द्वीप ज़ोलये।। ब०।।
ज़न्म ज़न्म छारान गोम यच़ काल।
वांस सूर प्रारान छचत गयम बाल।
लोल आम छुम गोमुत होलये।। ब०।।
वैकुन्ठुक भास बिन्द्राबन।
सास भास्कर छु नोन परिपूर्ण।
मुख हाव दुख ति कूत चोलये।। ब०।।

भजन नम्बर 43

द्रायि राधा हचत गूरि बाये।
मयि कृष्णनि दिवान वन्य।
श्यामं रंगनय मन्ज़ सुवह शामन।
पोष ज़ाच़न मन्ज़ ज़ंगलन।
भ्रान्च़ छायन तमिसन्जि राये।। मा०।।
छयत वोज़ल नील रंग रंग पोषन।
रोषि गोषण नाल रटहोन।
होश रुदुस न तमि अभिप्राये।। मा०।।
प्राण अपान पर तै पानै।।
गोस मशिरत गयि यकसान।
शून्य त्रावित शिव धारणाये।। मा०।।

द्वादशान्त चे पतिमे दारे।
जूनि डबि बियोठ रुटुन वन।
शान्त प्रकाश तति वुछनाये।। मा०।।
घटः कति तति अटल गाशी।
षोडश कला नोन सु प्रकाश।
अमृत बिन्द शशि कलाये।। मा०।।
अनहत शब्द मुरली वादै।
नाद बिन्दुक जीर भम साज़।
गोस क़नन मनवन आये।। मा०।।
अन्द्र निबरै सु सुन्दर श्यामै।
रुम रुम राम रमान।
ओं साहम पराऩ कृष्णा राये।। मा०।।
यूरि अन्तन रूद क़ेथ शाये।
वन वननय ननि खोत नोन।
द्वारिकायि छा किन मथुराये।। मा०।।
समिवी नेरव फेरव, वननय।
काल मरव क्या छु अरामाऩ।
रोषि पोषनूल दोह गछ़ि छाये।। मा०।।
समिवी सखिवौ वन्य दिनि नेरव।
बाल पानै सु नाल रटहोन।
राधकृष्ण कृष्ण राधाये।। मा०।।
बुध राध वृच़ गूरबाये।

प्रच प्यथ सोरान कृष्ण राधा।
पान नावान ज्ञान ग़गाये।। मा०।।
भाव दोध थन्य नेरव कनने।
पान दय फेरि खरीदार।
युथ न परामान आसन छ्युोनि त्राये।। मा०।।
गुल त गुलजार घास आबशारै।
रुसि भोम्बर ब्यियि जानावार।
कृष्ण गोपी परान भाखाये।। मा०।।
मेलि सौदा सास कर गेलन।
खेलि अथवास करित रास।
सास भास्कर सु प्रेम मायें।। मा०।।

भजन नम्बर 44

ऊधव लोल नार दज़ मान्य तन।
च वन कर वाति मन् मोहन।।
वनन वन्य दित छि लायान नाद।
कनन गोसना सु म्योन फ़रियाद।
सु छा मथुरायि बिन्द्राबन।। च०।।
दिनस रातस ज्ञणस सातस।
छि प्रारान शाम प्रभातस।
चोलय त्रावित मोहित तन मन।। च०।।

नचान अथवास करित दिन रात।
बजावान बन्सरी एक हाथ।
सु श्याम प्रभात सुबुह शामन।। च०।।
वनन वछय गाव वन्य दिवान।
धरन मनज गोपी रिवान।
बरन प्पठ तिम प्रारि प्राग्न।। च०।।
वजन रोस्त योस वजान सोय तार।
दज़न रास्त योस दज़ान लोल नार।
बनन दीपक मलहार ततक्षण।। च०।।
अग्न ज़ल ब्ययि पवन भुतरात।
चरा चर ज़ोव दिन किहो रात।
सारान कृष्णय करान धन धन।। च०।।
करित नित्य रास मंडलुक ग्यूर।
बुम्बुर अम्भरस तुलान तति व्यूर।
दिगम्वर सास भास्कर ज़न।। च०।।

भजन नम्बर 45

गोवर्धनय गिरिधर।
सुन्दर सु श्याम. यियि कर।।
गन्डहोस त्र्यठ त मालै।
भरहोस प्रेम प्यालौ।

झरहोस चूनि लालै।
करहोस प्रणाम यियि कर।।। सु०
वुछिहोन अछिव मनोहर।
लछनोव सु श्याम सुन्दर।
गछि कुठि करोस चामरं
रूम रूम सु राम यियि कर।। ।। सु०
मनविथ च गछ त अनतन।
रूद कति खठित रटित वन।
छुम दारि ओष ओछतन।
सरः गछि तमाम यियि कर।। सु०
यियिना सु सोन आदन।
कन थावि लोल नादन।
अन्जरावि लान वादन।
गन्ज़रेह सुधाम यियि कर सु०।।
कर वाति सु सोन मोहनं
लोल नार दज़ म्य हन हन।
शोलान यि नार छु दर तन।
फैलि तालि ताम यियि कर।। सु०
खेलि रास त्येलि यिलि राग।
मेलि दर्य छु धन धन भाग्य।
भास्कर सु वेल तथ जाग।
योद गेलि आप यियि कर।। सु०

भजन नम्बर 46

रटत ब नाल वोल सोन साल कृष्णा।
गन्डै त्र्यट त माल त्राव मलाल कृष्णा।।
निन्द्रि हत्य गछत बेदार चय सुन्दर श्याम।
गन्ड़ित कोस्तभ ब्ययि बनमाल कृष्णा।।
च़तुर भुज मोर मुकट चक्रधारी।
वलित पीताम्बर दुशाल कष्ण।।
पनुन प्रण योग क्षेमुम याद चय पाव।
मन्ज़िल दूर्याम दोह गोम बाल कृष्णा।।
थवय भर्य भर्य दुध थन्य प्रेम माये।
चतं शुद्व भाव आम्य ज़ाम्य प्याल कृष्णा।।
वनन वनबान वन्य दिथ नाद लायै
च़ मन मथुरयि मारान ड़ाल कृष्णा।।
ववित ब्योल मोखतुकुय जङगल फलित आये।
ब्रजिकि तमि हाल गय निहाल कृष्णा।।
सतच अथवास दासन भास ननि नोन।
दिवान भास्कर छु लोलचि नाल कृष्णा।।

भजन नम्बर 47

गन्डै त्र्यट त माल अज सोन साल इख़ना।
जगत रङ्गपाल कन्या लाल इख़ना।।

पनुन प्रण पाव याद नोन बोज फर्याद।
सनातन धर्म पक्ष गोपाल इखना।।
कुसंगकिन रंग रंग तंग आयि भुतरात।
नरसिंह अबतार यमि कलि काल इखना।।
छि प्रारान प्रारि गोपी गाव छारान।
बनित मस्तान मव मुतवाल इखना।।
नेत्र वथरै वतन मथुरायि गोकल।
कला पूर्ण च कंसनि काल इखना।।
छि फेरान जंगलन निंगलान विरह नार।
वुछान आकाश नत पाताल इखना।।
च्य प्रारान वांस सूर छन कांसि हन्ज़ कल।
वुछान फिरि फिरि वसान ओशचालि इखना।।
फुलित वुन्क्यन छु लोलुन बाग शोलान।
हर्द जर्दी अद अकाल इखना।।
करित अथवास सतकुय रास खेलव।
च़ नोन सास भास्कर निराल इखना।।

भजन नम्बर 48

वनत पोषि नूल ओश यियिनाये।
रोषि कति रुद छाये वन।।
होषि वजिस तमि माये।

जोषि तमि दरियाव चमन।
पोषि कोत इम छि लानिन न्याये।। रो०
सोल सिंगार लोल पारनाये।
दय चान यम छनाव हीय तन।
शाह परवय तोर वुफनाये।। रो०
कुंग रंग गोम रंग रिवनाये।
प्रंग वथरोम रंग रवकन।
संग दिल क्या सु बे परवाये।। रो०
रुशित गोम अनोम सुलनाये।
लोलि मन्जुल करित ललबोन।
नेन्द्रः होत इन्द्र नेन्द्रः वुजनाये।। रो०
गयस बेदार रुदुम छ़ाये।
दारि ओष वसान छुम न तत छ़यन।
आलमि आब तव गछिनाये।। रो०
सुलि द्रायस तमिसिन्ज़ माये।
भ्रम द्युतनम मन्ज़ गामन।
पिल कोर तोत वेल बोज़नाये।। रो०
सुन्ज़ पारहस चोन्ज़ तै दाये।
नील नागै छुस ब ज़ागन।
दूरि काफिल दोह गछ़ि छ़ाये।। रो०
बालि अनतने रुद कथ शाये।

काल मा दूरि यूरि अनतन।
बालि बाल पान कोरनम ज़ाये।। रो०
गहान शशि त रव गाह वुछिनाये।
गाह छु आकाश गाह पातालन।
सास भास्कर गाह तेलनाये।। रो०

भजन नम्बर 49

पथ वन कोर विगिन्यव रोव़।
पोरयि कुकिलव गोविन्द गू।
स्वर्ग अछ़ रछ़ वोछु लोल हच़।
गोकल मच़ गय नच़नस।
सोय रचना नारद ग्यूः।। पो०
ती ऋषिनय ग़व कननय़।
मन सूर लगि अन परने।
लोल नार सूर मलुक तननय।
वननय च़ाय ध्यान सोरने।
अहं त्रोवुख परुख ओं सू।। पो०
वुजान इमनय छु दर्दुक शोक।
चटिथ सत परद दाम दरियाव चोक़।
अनुग्रह आलव तोरै गोख।

इयवो इयवो छुन केंह रोंक।
दय टोठयोक जय जय छुः।। पो०
करिथ प्रथ कांसि सात अथांवास।
गिन्दान नित्य गोपियन स्थूत रास।
छु रुम रुम शयम सुन्दर सास।
बाहन सासन युगन छुन भास।
विश्वास कोर जन गछान अक च्यह।। पो०
बन्योमुत ब्रज छु वैकुन्ठ द्वार।
नमान तति सूर्य चद्रम तार।
समान वृच गोपियन मिलचार।
दमान दम दम छि लोलुक नार।
सु वयवहार वनत कथ क्या ह्यूह।। पो०
सूर्य चन्द्रम गोमुत मिलचार।
नमित देवी देव एकबार।
समिथ फलिमित छि गुल त गुलजार।
अम्बर हारान भोम्बुर जान वार।
परान श्री कृष्ण कृष्ण गू गू पो०
छु कर केंह भास खास चिन्मय।
असान रसमय वसान तन्मय।
मशित पर त पान गोमुत लय।
सु भास्कर सास तति उदय।
छु तेलान अन्द्र निबरै सूः।। पा०

भजन नम्बर 50

रोशि रोशि ओष म्योन यूरि अन्तन।
भरहस पोषि तोन यूर अन्तन।।
बाल ग़ोपाल श्री नन्द नन्दन।
शम रूप धारवुन यूरि अन्तन।।
द्वारिकायि छा किन मथुराये।
वथरोस वति पान जायि जायें
मायि स्वर वायिवुन यूरि अन्तन।। भ०
बालि बाल पान तस पत रोवुम।
दोह ग़ोम बालि वोडाल प्रोवुम
लाल छ़ाल मारवुन यूरि अन्तन।। भ०
वाल अन्तने कालि`मा दूरे
थनि चूर सोन कति सन रूद चूरे।
गोस मा गोस म्योन यूरि अन्तन।। भ०
समिवी सखियौ खेलव रास।
अथवस करि वरि करि सोन पास।
काच़ जूनि चलि ग्रहुन यूरि अन्तन।। भ०
कृष्ण कृष्ण करिथय लायोस नाद।
राधाकृष्ण बोज़ि सोन फर्याद।
याद प्ययस बाद प्रोन यूंरि अन्तन।। भ०
गोपालस सन्यास लागोस।

पाताल नागबल ज़ागि ज़ागोस।
लोलि मन्ज़ ललवोन यूरि अन्तन।। भ०
अन्दिहे न्याय कासि बन्धन।
वोन्दि मन्ज़ भासि देवकी नन्दन।
बन्दसै कबील क्रोन यूरि अन्तन।। भ०
दत गयम तस पतावत गारान।
हत तत सुय छुम नत मार पान।
मतना सु मोत सोन यूरि अन्तन।। भ०
लोलर वोन्दकुय सीर भावोस।
नरि आलवान लरि पान सावोस।
लोल आम भोम्बरून यूरि अन्तन।। भ०
शशि त रव निशदिन ननि खोत नोन।
हीशि रोस्त केशव रास खेलवुन।
भास्कर सास गुण यूरि अन्तन।। भ०

भजन नम्बर 51

कस वन ज़ीर भम सीर ओसमै।
हम्सो रूम रूम छ़यस ललवान।। हं०।।
शम दम धारणायि घ्यान धोरमै।
प्रच़ प्यथ वृच़ गोपी वखनान।
राधाकृष्ण कृष्ण वाद च़ोरमै।। हं०।।

गणापतयार चे नावि ब्यूठमै।
शुराह यार शोपूरि फ्रयुर वोलसान।
शहपर लूसिम त गाह ड्रयूठमै।। हं०।।
नप नप करवुन छ्रयप दोवमै।
दुपहम केवल पननुय पान।
वुफ कोर छयपि छ़ारि वुफनोवमै।। हं०।।
पवनकि नार स्यूत पान नोवमै।
दज़वन्य शाह पर करनस मान।
शशि कल ज़ल रस शेहलोवमै।। हं०।।
सतिये सत सोस तोस चारमै।
बाल पान द्रायस गोलुम पान।
दम दिथ ओंकुय पन खोरमै।। हं०।।
लोल नार मन्य़ वार पान ज़ोलमै।
सीतायि मायि ज़न नाज़नीन पान।
कलि गयम हज कार मल गोलमय।। हं०।।
कान कोन कोन यियि मोनि लोसमै।
रोनि मुछ़रित छोन्य छुम न भासान।
कोत गव दय येतिवुन्य ओसमै।। हं०।।
गोपालस सन्यास लोगमै।
सास तनि पूरुम वोलास शेभिसान।
पाताल नागबल ज़ागि ज़ोगमै।। हं०।।
परत पान मशिग्थि स्वर गूनमै।

लोलि ज़न ललवुन सुय ललवाण।
नग पान नचनस रंग ज़ोनमै।। हं०।।
दश नाद मुरली बाद बूज़मै।
हिशि रोस्त केशव निशि ज़ान पान।
राधिका शुद्व बुद्व म्य तोर सूज़मै।। हं०।।
ज़ग्रत स्वप्न आदि अन्त ओ:स्मै।
मन्ध्यानच सन्ध नाद बिन्द ज़ान।
सास भास्कर विकास भोसमै।। हं०।।

भजन नम्बर 52

ज्ञान दिम पान हाव रटथो नालो।
श्याम रूप राम दयालो वे।।
गथ दिम पथ रछुम सत श्री अकालो।। श्य०।।
सत गुरू पादन बन्दहै कपालो।
सत् चित् आनन्द निरालो वे।
गणपति सत सती हय्यन्दि द्वारपालो।। श्या०।।
दासन पास कर दीन दयालो।
सास रव भास निर्मालो वे।
ईश्वर महेश्वर सर्व रज्ञपालो।। श्या०।।
पिल कोत दोह दरि गव संग़रमालो।
बाल पान छुम छ्योटन बालो वे।

आयम सोरानछूयति गयम बालो।। श्या०।।

पीतांबर दर अम्भर दुशालो।

मोर मुकट चूनीलालो वे।

शेरि है त पारहै भक्ति मोखत मालो।। श्या०।।

क्षीर खंड नाबद भरहै थालो।

साल वाल त्रिजगत पालो वे।

ड़ाल मत दित वोन्य मो रठ मलालो।। श्या०।।

दूर्यर सूर गोम कोताह चालो।

रेह नेरि फटिथय पातालो वे।

आर छुयन वार छुमन नार पान-ज़ालो।। श्या०।।

भवसर आवलनि यमि जन्जालो।

तार दिम बडि कृपालो वे।

सेर गोस नेर नोन मो मार छालो।। श्या०।।

प्रथ काल पथ रछ यमि कलि कालो।

रूति फाल हाव सु कालो वे।

कालि काल नेर नोन मुह मद गालो।। श्या०।।

ज्ञानुक प्याल चाव माला मालो।

ध्यानुक द्वीप प्रज़ालो वे।

मस च्यत रस रस बन मुतवालो।। श्या०।।

सतची तलवार हयत च़ प्रतिपालो।

दुष्ठ दुर्ज़न असत गालो वे।

जय जय दिग्ग्रविजय जग संभालो।। श्या०।।

यच़ काल गव वोन्य प्रार कूत कालो।
हारान अशने चालो वे।
सास भारकर छुय दिवान प्रेम नालो।। श्या०।।

भजन नम्बर 53

वुन्द हन्दु रव मन फोलनावीथ।
प्रज़नावीथ कोर सन गव।।
राज़ इन्द्र गव छ़िद्रावीत।
देह मन्दिर ज़न परम शिव।
श्याम सुन्दर निन्द्रः पावीत।। प्र०।।
श्याम प्रभात अथ मिलनावीत।
मन्ध्यान च़ सन्ध भासान।
स्वप्न ज़ाग्रत विप्न श्रौपराविथ।। प्र०।।
निर्वासन रास खेल नावीत।
शक्ति पातुक भक्ति प्रभाव।
पोखत कारण मुक्ती दावीत।। प्र०।।
शून्य नाद बिन्द शिव बोलनावीथ।
दास स्वामी भाव करिथ अथवास।
भास अवभास खय कासनावीत।। प्र०।।
निन्द्रि हचनय मन तम्बलावीति।

निथ ननि ननि द्रायि बाज़ार।
तन मन धन घर भार त्रावीत।। प्र०।।
ज़्यव नार स्यूत वार छलनावीथ।
गव तति तोर केंह न त क्याह।
अछव बूज़न कनव वुछनावीथ।। प्र०।।
रूषित गव अनोन सुलनावीत।
लोलि, मन्जलि लोल्य लोल्य करोस।
चुरि थावोन कस ह्यकोन हावीत।। प्र०।।
रिन्द गिन्दुना छु संसार हाविथ।
जिन्द मरणुय वोन्द चलि खय।
रिन्द पानय द्वन्द बाव त्रावीत।। प्र०।।
चित विकास मन फ़ोल नावीथ।
सास आदित्य प्रज़लान रव।
श्रवास अश्रास भास्कर प्रावीत।। प्र०।।

भजन नम्बर 54

ओष छुम स्यूत सतिये, तोषना बोष दय आम।
पोष वथ रोस फोतिये, रोषि मा रोज़्यम पाम।। ओ०।।
गिन्दनस गोमुतये, नन्द नन्दन निष्काम।
इन्दु रव वोन्द फोलमुतये मन्ध्यानच सन्ध सुबश्याम।।ओ०।।

वृच़ म्यानि गूरिबायि सतिये, छिन्रूद्ररेमच सत काम।
निन्द्रिहच़ प्रारान ततिये, सुन्दर ह्मत थनि जाम।। ओ०।।
स्तोतनस आर क्रतिये, धारणयि प्राणायाम।
श्रव्स अश्रास मोदतिये, व्यास नारद सुधाम।। ओ०।।
फेरोस ब्रोन्ठ पतिये,नेरोस लोल दय आम।
करहोस नालमतिये, बाल पानय तमना द्राम।। ओ०।।
केह ऋषि छि मस्तान मतिये, केंहच़न पन्थ दूर्याम।
केंह ऋषि छ़ि मन्दछे मतिये, केंहचन पोखत गव खाम।। ओ०।।
बाल पान केंह छि द्रामतिये, काल काल लबन बिश्राम।
रिन्द वुछत ज़िन्द प्रापतिये, रूम रूम श्याम रूप सुराम।। ओ०।।
मुरली शब्द भरमतिये, रस रस ह्मस व्यसर्याम।
लय वुछत पय आम ततिये, अन्हत शब्द पयगाम।। ओ०।।
शशि कल ज़ल सगिमतिये, निष्कल वोन्द शेहल्याम।
कलि कलि गयम सुमतिये, तल प्यठ ती मोलव्याम। ओ०।।
कारण छि लय गामतिये, गन्धर्व ग्यवान स्वर साम।
स्तोतनस पान सरस्वतिये, सिद्ध मार्ग वोल ध्याम।। ओ०।।
शाह पर छि तति ददमतिये, वननस ज़्यव गयि थाम।
द्वादश द्वार उदमतिये, अक त नव तति भास्याम।। औ०।।
भास छुमन रास ख्यूलमुतये, सास भास्कर प्रजल्याम।
श्रास औश्रास एक स्थितिये, शान्त तेज़ बीज प्रकटयाम।। ओ०।।

भजन नम्बर 55

वैकुन्ठ द्वार बिन्द्राबन त लो लो।
श्यामा कार नन्द नन्दन त लो लो।।
वोन्द इन्दुरव मन फोल नावीत।
निष्कल मन शशि कल दाम चावीत।
ज़ीर भम कुय आबि ज़म ज़म चावीत।
नाद बिन्द योग निद्रायि सावीत।
प्रावीत थान सिद्ध आसन त लो लो।। श्या०।।
देव देवी सारी श्रणे आये।
वरि योद दातः करि सुय सोनय पाये।
मायि वोलमुत रासुक छुक अभि प्राये।
नाल रटहोन बाल पान क्या छु परवाये।
रूप गोपियन हुन्द छु धारण त लो लो।। श्या०।।
वनकी कुल जान्वार ब्ययि आबशार।
वछि गाव शुर्य पोषि अम्भार।
कृष्ण बालान वसनसं लोल अशि दार
तन्मय ध्यान मोचित तद् आकार।
श्याम सुन्दर मुरली बजावन तं लो लो।। श०।।
कर्म फल दात धर्मुक नोन सु अवतार।
सारादि सार द्वारिकायि हुंन्द सु सरदार।
हंस नादय कंसुन काल शाहमार।

बाल गोपाल सुन्दर गिरिवर धार।
भार ज़गतुक वार कासुवन लो लो।। श०।।
गोपाल सुय गोकल कुय गुल्बहार।
मोल्य ह्यम हन छिम कति मोखत त द्यार।
सीन मुचरित वनहस विलः तय ज़ार।
नीले नागस ज़ागहस प्यठ हंस द्वार।
मुक्त गछहव शोभ दर्शन त लो लो।। श०।।
गूर करहोस लोलि मन्ज़ सुय ललनावोन।
दूर गरहोस जिगरस मन्ज़ सावोन।
चूरि प्रेमुक दोध गलि गलि चावोन।
मन वाजि प्यठ सुय नाव खन नावोन।
रोजि अर्मान र्स्वग हूरन त लो लो।। श०।।
आदन वाजि प्रारान वाद सोन सूर।
ज़गतकि राजि लोल नार गवना सूर
योगियन हन्दि ताज दार मो ह्यम दूर
अन्द्र निबरै सु प्रकाश भास पूरि पूर।
थनि चूर सानि मन मोहन त लो लो।। श०।।
तिथि सम्वाद पाताल ब्ययि आकाश।
भरन आमति हेरि बोन शब्द प्रकाश।
सु प्रकाशय ननि नोन चित्तआकाश।
सु अनुभव गम्य तेलान शान्त प्रकाश।
सास भास्कर जन बोन प्रजलन त लो लो।। श०।।

भजन नम्बर 56

नन्द नन्दन गोमै, बिन्द्राबन गिन्दाने।

नन्द नन्दन गोमै, बिन्द्राबन गिन्दाने।।

मधुसूदन गोमै वध राइसन कराने।

सिद्व साधन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

स्यूत गोपियन गोमै हीत हीत प्रति भाराने

गीत गोन्दन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

नन्दन वन गोमै देवन न्याय अन्दाने।

आनन्द गण गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

गूरि बालकन गोमै न्यूर दूर गाव रछाने।

हयत गोवर्धन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

काम धेनन गोमै श्याम सुन्दर पालने।

पांम थवने गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

तन नावनि गोमै वनफलमूल च़टाने।

लूट ह्मत मन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

सूर्य ज़ोतन गोमै वीर्यवान पान हावने।

मोख फ़ोलवुन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

परि पूर्ण गोम ग्रायः दूरन छु माराने।

मायि मोहन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

आरवलन गोमै खार जिंगरस छु थावने।

नार न्यंगलनः गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

स्वर गायम गोमै स्वर असुरन छु मोहने।
मन व्यमर गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने। न०।।
गूरि बायन गोमै चूरि दोध थन्य छु ख्यवाने
न्यूर गावन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।।
बृक्ष बानुन गोमै वेरि राधायि वरने।
वर करान गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।
मोखत ववने गोमै पोखत कार तीछि लोनने।
भक्ति रञ्जण गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।
रास खेलनि गोमै सास भास्कर छु फोलने।
निर्वासन गोमै बिन्द्राबन गिन्दाने।। न०।।

भजन नम्बर 57

श्याम सुन्दर दर्शन दियिना।
हा ऊधव वन तो ब्यथि यियिना।।
ज्ञानुक ताज शेरि दित सु महाराज।
युधिष्ठर नोन नेरि जगतुक ताज।
पालनस कर्म वेद त्रयियिना।। हा०।
अर्जुन ज्ञानुक अस्त्र ह्यात।
दुर्जनन गालवुन ब्रोन्ठ तै पत।
गीतायि निर्णयि ब्यथि यियिना।। हा०।
मोह मद कंसासुर काम क्रोध।

पूतना वासना गछि नाबूद।
मुकलावि बोज देवकी यियिन।। हा०।
वृच़ गोपी बछि गाव पालनस।
रंग रंग राक्षसन ब्योल गालनस।
आर्त्यन कासनि भय यियिना।। हा०।
पन पहारि द्वारिका बनि तात्ज्ञण।
गारि युस नारस बनि गुल्शन।
बाल यार सुधामै ब्ययि यियिना।। हा०।
थम मन्ज़ अवतार नरसिहं रुप।
दारित राज्ञसन यच़ गव कूप।
प्रल्हादनि मालयि यियिना। हा०।।
श्रधायि अहल्यायि पाप गछि़ दूर।
अहंकार रावणस लंकायि सूर।
रुम रुम राम रमायियिना।। हा०।
नार पान ज़ालव मटि छुस म़ार।
अमार तम सन्दि असि छि बेमार।
मार मोत सोन वार लयि यियिना।। हा०।
लोलि मन्जबाग सुय ललनावोन।
चूरि थावोन कांसि कर हावोन।
वांस सूर तमि सन्ज़ि प्रियि यियिना।। हा०।
दुरे वोरवकोन न आब यीच क्या छि तार।
फिर फिर काजि तमि हजि गयि कार।

गोस क्या गोस लास लयि यियिना।। हा०।

मित्रस नेत्रन मन्ज़ वथरोस।

कोंग काफूर मुष्क तन नावोस।

अर्यनि रंग गोमुत छु हियि यियिना।। हा०।

बुध रुप बुध देव शुद्ध सत् चित्।

वुजनावि जगतस फेरि करि हित।

साम रूप पान गार्गी यियिना।। हा०।

जाल पज्जर जानावार चलन।

कालि मा बोलन तोत कलन।

अद कर हर्द जर्दी यियिना।। हा०।

सतची भूतराच कासवुन व्याध।

प्रत देश भासि नोंन धर्म सम्वाद।

पथ रछनि सती द्रुपदी यियिना। हा०।।

भव सर अज्ञान क्रमनय कोर।

बन्द खोर गजेन्द्रस लोग शशधर।

हरी हर वरदा भय यियिना।। हा०।

तस दिन निशि दिन छु केंह भास।

मच़ गामच लोल हच़ उदास।

आमि जामि प्याल रव्यनि च्यनि यियिना।। हा०।।

वेल वोत मेलनुक खेलव रास।

अथ वास वरि करि सोनय पास।

भास्कर बन्त आश्चर्य यियिना।। हा०।।

भजन नम्बर 58

दोह दरि गोम तूर्य पत लारय।

आरबल नत मारय पान।।

द्वारिकायि छुक किन मथुराये।

वति वथरय पान पादन।

नेत्रन छम अशि ने धारय।। आ०।।

मोनि वन्दहय बन्धन कास्तम।

वोन्दि भासतम अन्दनम न्याय।

नन्द नन्दन इत दुबारय।। आ०।।

साल इखना नाल्य पारावय।

भक्ति मोख़त माल नाल्य कन दूर।

काल्य काल मारि अद लोकचारय।। आ०।।

जगि हन्दि राज महाराजय।

आदन बाजे बोज़ फ़र्याद।

योगियन हन्दि ताजदारय।। आ०।।

लोल वाणी नादा लाये।

पोषनूल जन ग्यवि कृष्ण गीत।

साज़ सन्तूर राग सेतारै।। आ०।।

मान अवमान निशि रुद न्यारय।

ध्यान चाने रुंग तिमव तन मन।

घर भार गोख वैकुन्ठ द्वारय।। आ०।।

हिशि रस्ति ईश धार अवतारय।
निशि भास कास वोन्य अज्ञान।
ॠषि क्रेशान डेशहोन वारय।। आ०।।
मन्ज़ मारकन वन्य दिनि नेरय।
जूनि छान्डत मन्ज तारकन।
सास भास्कर तेज़ धारय।। आ०।।

भजन नम्बर 59

चित विकास रास अथवास प्रेम वाद।
लोल बन्सरी नादा राधा कृष्ण परयो।।
शान्त तेज़ आकार नाद बिन्द ओंकार।
साधनायिअर्ध नादा राधा कृष्ण परयो।।
कसुन संहार हंसू निर्विकार।
संसार कास व्याधा राधा कृष्ण परयो।।
राज योग अनहत बाजि सूहंसू।
गू गू कुकिल नादा राधाकृष्ण परयो।
होषि कृष्ण कृष्ण गीत वनन वन्य दिमयो।।
जोषि पोषि नूल सम्बादा राधाकृष्ण परयो।।
वथरोस नेत्रन-मन्ज मथुराये।
प्रेम मायि अहलादा राधाकृष्ण परयो।।
स्वर्गचि अछ़रच वोछू नचनस गयि मच़।

यावनस ह्योतख दादा राधाकृष्ण प्ररयो।।
गोपियन सन्मोख सु सरूप हर मोख।
सु मोख प्रसादा राधाकृष्ण परयो।।
नठ छि शाह परनै धरि करि कुस मान।
अनभव गुण वादा राधाकृष्ण परयो।।
क्रेषान ऋषि नित्य डेशिहोन ननि नोन।
गोपियन छु धन्य वादा राधाकृष्ण परयो।।
पर त पान मशिरित तस पत भर लोल।
कालि गछि वाद अदा राधाकृष्ण परयो।।
शाम प्रभात मेल खेल श्वास वास ओश्वास।
भास्कर निर्बाधा राधाकृष्ण परयो।।

भजन नम्बर 60

दर्शन दियि यियिनाये।
करसन सोन कृष्ण राये।।
मिर्णय नयिनय छाये।
करसन सोन कृष्ण रायै।।
नेत्रन अन्दर वथरावोस।
सीन मुर्चारथ कीन भावोस।
लोलि ललवोन लोल माये।। कर०।।
यी वन्त थनि चूरसय।

प्रारान छि तिम ह्मत गुरसय।
थनि लोट ह्मत गूरिबाये।। कर०।।
वथरोस वतन हियि अम्भरय।
लयि लोस तस क्या छु गम भरय।
प्रियवनि परोस तोताये।। कर०।।
मथुरायि गोकल वन्य दिमोस।
जमुनायि बल सारी समास।
पान आलवोस मालाये।। कर०।।
निन्द्रि हचन लूटित सु गव।
बिन्द्राबन वोन्य वन रटव।
नाल मति रटोन पालनाये।। कर०।।
ऊधव च़ वन्तस कोन आव।
कति रूद व्यापक तस छु नाव।
भक्तयन हन्ज़ि रज़ाये।। कर०।।
सनवुन मनस बन्सरी नाद।
वन वोन चेतस पोवथस याद।
निन्द्रि हच़ छिन्दरन आये।। कर०।।
गन्धवै देवता सिद्ध साध।
नारद त व्यास ब्ययि प्रह्लाद।
प्रारान छि प्यठ जमुनाये।। कर०।।
ग्वाल बाल वछि गाव हयत।
प्रारान छि सारी प्रच़ प्यत।

गापी ज़ल भरनि द्राये।। कर०।।
डेशनय योद मा क्रेष्णय।
ॠष राग रछ वुठ फेशनय।
त्रेशि हच़ मरण मा माये।। कर०।।
हय्स होष मशरीथ पर त पान।
तम्बलेम़च प्रच़ पेवानं
वन वन वनय दिनि द्राये।। कर०।।
सम्वाद बूज़िथ ज़िर भम।
अज़पा ज़प सोहं हं।
ओं भूर भुवः धारणाये।। कर०।।
अथ वास करिथय भासि नोन।
वसुदेव रास तति खेलवुन।
सास भास्कर शेभनाये।। कर०।।

भजन नम्बर 61

मनि मन्ज़ ललवथ कन्या लालो।
भय हर बाल गोपालो वे।।
गोपियन स्यूतिन मारान छालो।
दुख हरो भक्ति रज्ञपालो वे।
ज़न्म घट कास्तम कंसनि कालो।। भ०।।
भय मन्ज़ कडतम दय श्री अकालो।

रङ्गपाल हा कृपालो वे।
प्रेम मस भरि मैं मसकी प्यालो।। भ०।।
दूर्यर चोनय कोताह व चालो।। भ०।।
वलन आस ज़न्म जालो वे।
ज्ञान दुकारि बनि तथ परकालो।। भ०।।
खटतम मत पान रटतम नालो।
आसतम च़य नाली नालो वे।
लूसुस प्रार वोन्य कोताह कालो।। भ०।।
हारान वुछथस अशिने च़ालो।
लालो छ्र्यति गयम बालो वे।
बालि गोम बाल तै किहो सम्भालो।। भ०।।
दोह आम सोरान छचत्य गयम बालो।
पलि केह पोवुम न मालो वे।
अथ छिम छ्र्चन तै छयस बे हालो।। भ०।।
यलि बनि संयोग आसि कुस कालो।
द्वयी रोज़िन : कुनि कालो वे।
गुरू शब्द इमयो पत नन्द लालो।। भ०।।
नै छुक आकाशि नै पातालो।
नै छुख जंगलन त बालो वे।
वनि छुखनह इवान आसोथ नाली नालो।। भ०।।
मन सर कुय बनय राज़ मुरारो।

भक्ति सुनद छुय चे़ सालो वे।

रछ तम संकट यमि कलि कालो।। भ०।।

भजन नम्बर 62

अरे कनया तू वस्त्र दे हमारे।

श्री श्यामा प्रभू प्रीतम प्यारे।।

चिद आनन्दा सदा श्री गोविन्दा।

मकुन्दा बाल कृष्ण नाद बिन्दा।

नित्यानन्दा ज़गत कारण मुरारे।। श्री०।।

हुवा अर्पण तेरे चरणों में तन मन।

ज़गत में कुछ नहीं देखता हूं तुझ बिन।

कुटम्ब घर बारबति सारे के सारो।। श्री०।।

वृति जैसी सती स्थिति पति बिन।

रती भर है नहीं गति प्रतिज्ञण।

सुमत उन्मत तेरे दर्शन भिखारे। श्री०।।

शरीर और प्राण इन्द्रिय जो तन्मय।

बहिर अन्तर निरन्तर साज्ञी चिन्मय।

नहीं तुझ बिन कोई दर्शन भिख़ोर।। श्री०।

ऋष्यन अर्मान क्रेषाण डेशहोन ज़ात।

छि वुठ फेशान आशव दिन त ब्यियि रात।

छि तोषान गोपी रोषान द्राये।। श्री०।।

जगत बीज शान्त तेरा है बिस्तार।
त्रिकोटि भास्कर ख़ास दीप्ति आकार।
अग्न बिजली सुर्य चन्द्रम तारे।। श्री०।।

भजन नम्बर 63

स्वर साम सुब शाम श्याम रूपसय।
लागोस दस्त दस्त पम्पोश।।
नाद लोय राधायि बाल कृष्णसतै।
यन चय छ्रचन गोख तन कोन आख़।
प्रारान सूर गोम बाल पानस तै।। लागो०।।
जीर भम सुय नाद खोत अर्शसतै।
फर्शसान चरा चर लोल भरन आव।
सुय लोल भागरन आव ज़गतस तै।। ला०।।
ग्रख दिच़लोलन तथ कुनिरस तै।
केह मन्ज़ क्याहताम गौ नमूदार।
रंग रंग फोलिथ आव सु पूर्ण बरजस तै।। ला०।।
अग्नस त पवनस गग्न मडलस तै
भूतरात आवशार पशु त जान्वार।
राधा कृष्ण कृष्ण अज़पा ज़पस तै।। ला०।।
लोल आलव द्यतुव ऊधवस तै।

हाऊधव गछ़ टकन व्रज मंडलस।

तिहन्दि प्रेम छुस गोमुत मस्तान मस्तै।। ला०।।

भक्ति तिहन्ज़ वाच़ आकाशस तै।

तमि लो!ल शोलान. नभ त भूतरात।

बोलान कृष्ण कृष्ण शिव गाशस तै।। ला०।।

ति बूजित ऊधव वोत मन्ज गोकलस तै।

वछि त गाव गोपी रूस्य जान्वार।

गुल त गुल्ज़ार निशि आय तस तै।। ला०।।

च़रा चर दह दिशायि सांपनित मसतै।

शून्य मन्ज़ बोलान बिन हुक नाद।

पर त पान मशिरिथ ज़पान कृष्णसतै।। ला०।।

मोर चा़तक पोषिनूल नचनस मस्तै।

कोह त वन बययि नदीहथ्थ सबजार।

अजपा सुय बोल कुकिल नादस तै।। ला०।।

यि डीशत ऊधव गौ मन्ज ध्यानस तै।

योग ज्ञान ध्यान मठुस तति लय गौ।

शून्य गोसनिनःआव वनि कयाहकस तै। ला०।।

सुय रास चुरास लख एक रस तै।

सास भास्कर नित नोनचमकान।

हावस तमि बति तथ ज़ागस तै।। ला०।।

भजन नम्बर 64

परातपरपरम शिवो। जय दीवी दीवी।
निदूँदी ब्यँदी। जय जगथ आनन्दी।
नाद ब्यँद मध्य स्यँधी।।०।।
पछ रछतम वरतम। सच भाव सथ सथ करतम
प्रेम आनँन्द बरतम।।०।।
तीज़मय आकार, सुय। बीज़मय ऊँकार सुय
शरण तथ आधार सुय।।०।।
सुर असुर न्यथ छि सुरनस। कारण गथ करनस
गन्धर्व वीद परनस।।०।।
अष्ट सिधी नव निधी। बास इष्टदाती कष्टकास।
दुष्ट नष्टकर सपुष्ट भास।।०।।
एँ बीज़ कूल्लीं बाज़ी। शाँत ऐकान्त तीज़ी।
श्री शक्ति निर्बोज़ी।।०।।
पुरव प्रकाश ऊदय। दशम द्वार मध्य ऊदय।
इदु रूव बनि एकमय।।०।।
हर्दवार बनि उतपथ। प्रसाद चानि बानुवथ।
शुद शिव बनि प्राप्त।।०।।
धर्म, अर्थ, मूक्ष-कामय। यिवानय चू परम धामय।
परिपूर्नस छुः न्यषकामय।।०।।
बालक बाव भाषा। बोज़तम छम आशा।

मूह गटि हाव गाशा।।०।।

चांन्यी दया ज़ीवन। तवय कारण छि सीवन।।

मनवाँछ़ित दीवन।।०।।

सास भासकार छि प्रज़लान, चि़थ विमर्ष दीपित्मान

हर्ष गण न्यथ निर्वान।।०।।

भजन नम्बर 65

बाह राव गाह चोन माह पैक्रियै।

नाजुच़ थुर शाह सौदँरिये।।०।।

नाज़नीन पानस साज़ कुमि कुरिये।

नाजुल जादूगरिये लो।।०।।

भ्रमरावि अम्यि चअन्य सेहर सामुरियै।।०।।

रोनि गोड़ श्रुन्यि दार चूनि झरिझरिये।

शिनि मन्ज़ बोलान बिनाहुक नाद।

परिमित्य जुर्य गायि अनुपर्य पर्य।।०।।

आसमान, वुछ़रवय सोन्य कोतुर्ये।

कमि बाज़ारिय त्रीवुथ रूव।

शाह पर लूसिम मान, कर करियै।।०।।

हूरन सूर गव चानि दूरर्यूयै।

नूर बर्थ बर्यै तिम, छि वनवान।